

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

ब्राह्मण का पुत्र

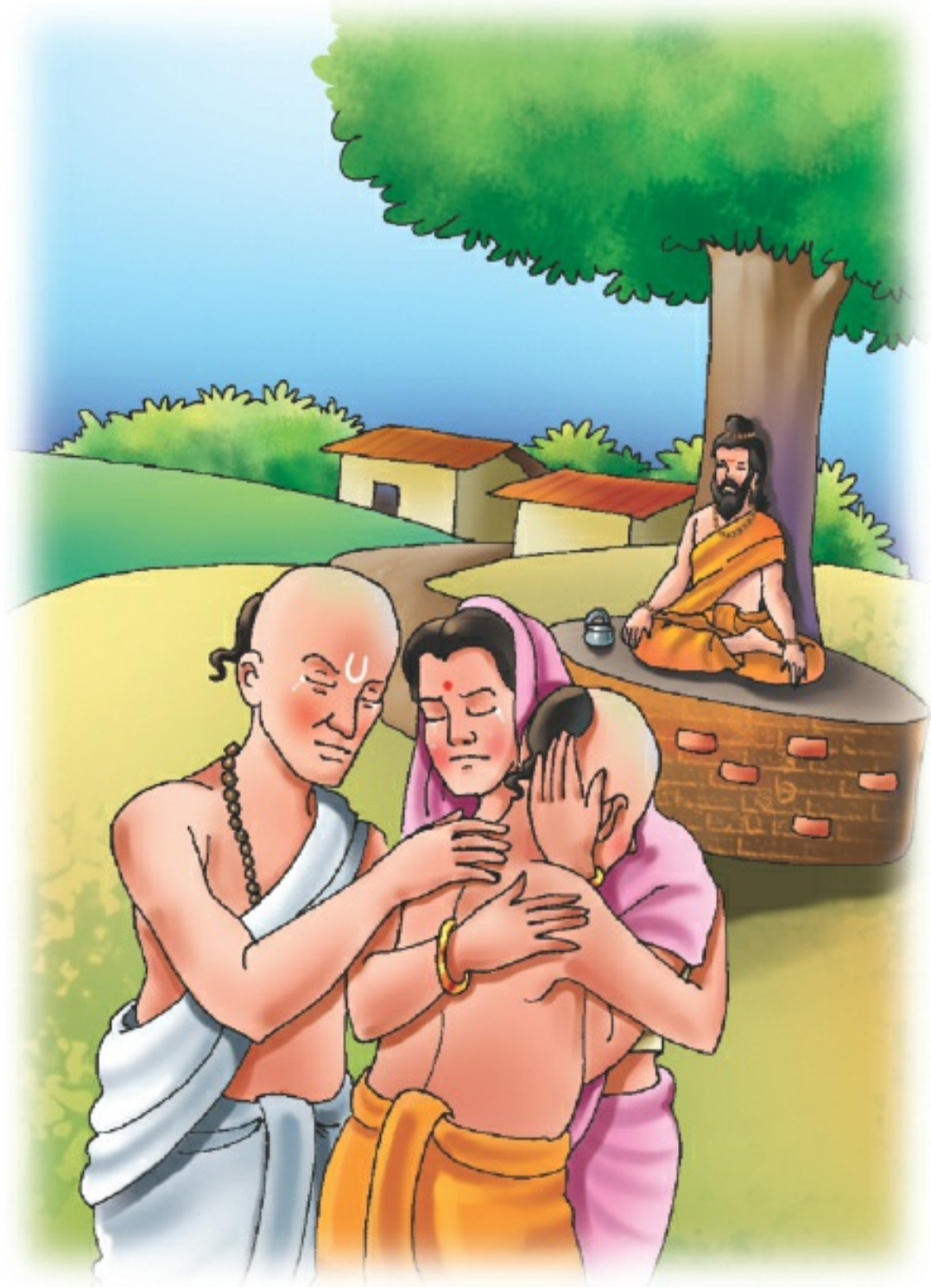
बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने फिर वहां पहुंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल ने नई कहानी सुनानी शुरू कर दी।

उदयपुर में एक बहुत ही धर्मिक ब्राह्मण रहता था। ब्राह्मण और उसकी पत्नी के पास ईश्वर का दिया सब कुछ था। वे ईमानदारी के साथ जीवन जी रहे थे। वे निसंतान थे। पुत्र प्राप्ति के लिए वे हमेशा ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।

ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी और ब्राह्मणी ने पुत्र को जन्म दिया। ब्राह्मण दंपत्ति की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने गरीबों को भोजन कराया तथा ईश्वर का धन्यवाद किया।

ब्राह्मण दंपत्ति अपने पुत्र को सर्वगुण सम्पन्न देखना चाहते थे। उन्होंने उसे प्रेम और दयालुता का पाठ पढ़ाया तथा सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दी। बालक बड़ा होकर युवक बन गया।

शहर में सभी लोग उस युवक की बुद्धि और ज्ञान की चर्चा करते थे। ब्राह्मण दंपत्ति ने उसके विवाह की इच्छा से योग्य कन्या ढूंढनी शुरू कर दी। पर एक दिन उनका पुत्र बीमार हो गया। शहर के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक की चिकित्सा तथा ईश्वर की प्रार्थना सब बेकार गई। एक माह के बाद युवक की मृत्यु हो गई। माता-पिता अंतिम संस्कार के लिए मृत शरीर को लेकर गए। उनका करुण विलाप सुनकर वृक्ष के नीचे बैठा ध्यानमग्न साधु उठकर पास आया। उसने मृत युवक तथा करुण विलाप करते माता-पिता को देखा। उसके मन में एक विचार आया। “मैं अपना पुराना शरीर त्यागकर इस युवक के शरीर में प्रवेश कर सकता हूं।” ऐसा सोचकर साधु बैठकर पहले थोड़ी देर रोया, फिर हंसा और फिर उसने ध्यानमग्न अवस्था में आंखें बंद कर लीं।



उसी समय युवक ने अपनी आंखें खोल दीं। आश्चर्यचकित ब्राह्मण दंपति अपने पुत्र को सीने से लगाकर रोने लगे।

बेताल ने राजा से पूछा, "क्या आप बता सकते हैं साधु पहले रोया, फिर हंसा। ऐसा क्यों?"

राजा विक्रमादित्य ने कहा, “शरीर छोड़ने के कारण दुःखी साधु पहले रोया और फिर पुराने शरीर को छोड़ नए मजबूत शरीर में प्रवेश करने की प्रसन्नता में हंसा।”

विक्रमादित्य के उत्तर से प्रसन्न बेताल राजा को छोड़कर फिर से उड़कर पीपल के पेड़ पर चला गया।

